

Written by मेरी बटिया संवाददाता
Thursday, 05 July 2018 03:16

: 00 0000 000000-0000 00 00000000 00 00 000000 00000000 00 000000 00 00000000
0000 : 00 00 0000 0000 00000000000000 0000 00 0000 000000 00 0000 :
0000000 000000 0000 00 0000 000000 00 000000 00 00, 00 0000 00 00000000 0000 00 00
00000 00 00000000 : 000000-000000- 00 :

00000 00000000 000000000000

00 00000000 :आदरणीय 0 मडी सर 0 वं गुरुप 0 डटिर सर,

नमस्कर 0 मै अमर उजाला संस् 0 थान केबरेली संस् 0 करण की यूनटि में वर्ष 2015 से कम कर रही थी 0 दो साल ट्रेनी रहने केबाद अगस्त 2017 में मुझे जूनियर सब 0 डटिर पद दिया गया 0 पछिले मंगलवार यानी 17 अप्रैल के मैने पद से इस्तीफ दे दिया या कहुं ऐसे हालात पैदा किये ग 0 जो मेरे पास कोई और उपाय नहीं बचा 0

जाने आप अवगत है या नहीं, अगर नहीं तो क्यों नहीं संपादकीय वभिाग केहालात बदतर हो ग 0 है 0 अनुशासन और ब 0 केसम्मान केनाम पर शुरु हुई सख्ती कन्न बेइ 0 ती और बंधुआ मजदूरी में बदल जा 0 गी, इसक अंदा 0 शायद ही संपादकीय वभिाग केकिसी साथी के रहा हो 0 जब से वनिीत सक्सेना जी ने प्रभार संभाला, रपिोर्टगि टीम में कसिी के भी साप्ताहकिअवकश तकनहीं दिया जा रहा है 0 पहले अमूमन रात दस बजे तकघर चले जाने वाले रपिोर्टर अब रात दो बजे तकयहां बैठे झीक्ते रहते है 0

मै लगातार 14 दनि से कम कर रही थी, मैसट्रुअल टाइम पर भी कम करने से तबीयत बगि 0 गयी 0 इसल 0 पछिले सोमवार 9 अप्रैल के मै संपादकजी से अवकश मांग कर घर गयी 0 अगले दनि भी तबीयत ठीकन होने पर मैने उन्हें कर्यालय न आ पाने की सूचना दी 0 फरि शुक्रवार के उन्हें सूचति कया क शनवार से ऑफिस आऊंगी 0 बावजूद इसकेशनवार के ऑफिस आने पर मुझे प्रता 0 ति कया गया 0 सटिी चीफअनूप जी ने संपादकजी के मेल करकेमेरे खलिाफअनुशासनात्मककर्रवाई की सफिरशि की 0 मंगलवार केबाद हु 0 अवकश केबारे में कोई सूचना न होने की बात दर्शाकर स्पष्टीकरण भी मांगा गया 0

000000 0000 00 0000-00000 00000 0000 0000000 00 00000000 0000, 0000000 00 0000 00 0000 00 00
0000000-0000000000000 0000 00 00 0000000-00000000 0000000 00, 00 0000 0000 0000000 00 0000000 0000
0000000 00000000000000 0000 00 0000000 000000000 00 0000 00 000000000 00
00000000 0000 0000000 00000 00 00000 0000 0000000000000 00 0000000 00 00000 00000 0000
0000, 000000 0000000 00 0000 00 0000000 00000000 00000 00 0000000 00 00000 0000 :-

0000 000, 0000 000

शाम के समय जब वह कार्यालय आये तो मेरा जवाब पं ने से पहले ही उन्होंने आदेश दे दिया कि मुझसे अब सटी में काम नहीं लिया जागा न्यू रूम में सटी रिपोर्टिंग, सटी डेस्क, डाक पेज 1, सेलेक्ट और पीटी स टीम के सदस्यों के सामने उन्होंने बहुत खराब ढंग से बात की बोले, मैं तुम्हें सटी टीम में नहीं देखना चाहता, तुम्हारी खबरों की यहां मुझे रूरत नहीं है उन्होंने मुझे अपनी सीट से तुरंत चले जाने के कहा मैंने उनके बोला भी कि अगर आप मुझसे काम लेना नहीं चाहते हैं, तो संपादकजी से बात करने दीजा (वह उस वक्त व्यस्त थे), अगला आदेश मल्लिने तकक्या मुझे मेरी सीट पर भी नहीं बैठने दिया जागा?

खैर, मैं तुरंत संपादकजी के पास गई और कहा कि इस तरह का अवकाश लेना तो मेरा राइट है, इस पर कार्रवाई किस तरह हो सकती है? वह सुनते ही भक ग कि मैं इस तरह अधिकारियों की बात न करूँ मुझे बताया गया कि मेरा व्यवहार बहुत खराब है, आदा बताया गया कि अनूप जी के साथ पहले कभी मेरा व्यवहार ऐसा रूर रहा है, जिससे वह भक के है (हालांकि ऐसा कभी नहीं हुआ) और इस तरह उनका व्यवहार जस्टिफाई हो गया! अनूप जी ने सोमवार के साप्ताहिक बैठकमें यह भी घोषित कर दिया कि क्यों उन्हें अवकाश की कोई सूचना नहीं इसल कि यह 'लीव वदि ऑउट पे मानी जायेगी

0000000000 00 00000 00000 00 00000 00 000 000000 0000 00 00000 00000 :-

00000000 000000000000

तो इस तरह मैं अपनी मेंस्ट्रुअल लीव के ल कि दोषी साबित हो गयी! फिर स्पष्टीकरण किस खानापूरी के तहत था, यह मैं जानना चाहूँगी शनिवार के संपादकजी ने अपने केबिन में अनूप जी से कहा गया कि यह महिला अपनी गलतियों के ल सार्वजनिक माफी मांगने के तैयार है, उसे आखिरी मौक दिया जागा यह भी कहा गया कि हो सकता है उसके फादर ने उसे सीनियर की इत करना न सखिया हो, जो अब वो सब मलिक सखिगे मैं उस वक्त किस मानसिक स्थिति में थी, शायद सही तरह लिख नहीं पाऊंगी पर उस रात मैं सो नहीं पाई बगा हसान करते हु मुझे आ रि मौक जो दिया गया था

इस बात यह भी है कि जवाब अच्छा न लगने पर मुझसे उस मेल उत्तर दोबारा देने के कहा गया जो मैंने नहीं किया

जेंडर विषय के वदियार्थी होने के नाते मेरे ल कि यह पैटर्न समझना बगा आसान है और पत्रकार के रूप में बेहद दुखद कि किस तरह कल की क ऐसे शब्दों के बिना झझिकबोलना, अपनी बात रखना, अपने अधिकार जानना दूसरों की नर में ल की के गरि हु संस्कार बन जाता है पर पतित्सत्तात्मक मानसिकता उसमें ल की के मां-बाप की कमी बताती है कि उसे होमली नहीं बनाया जा सक, बलिकुल किसी ससुराल के जैसे

मुझे याद है जब पहली बार मैंने वनीत सक्सेना को मेरी तबीयत ठीकन होने का स्पष्ट कारण लिखा तो वो वचित्र तरीके से बोले कि क्या मैं वदिश में पैदा हुई हूँ, क्योंकि हमारे (उनके) संस्कार तो इस बेटुके खुलेपन की इजाजत नहीं देते। उस वक्त जो बात उन्हें संस्कृति के खिलाफ लगी थी, बाद में मुझे यह भी पता लगा कि उस स्वास्थ्य संबंधी सूचना पर सार्वजनिक चटकारे लगे थे! संपादक होने के नाते उनसे गोपनीयता अपेक्षित थी, खैर उन्होंने किसी भी स्तर पर खुद को संपादक की गरिमा के अनुसार नहीं ढाला। मुझे हमेशा वह किसी गुमटी पर पान चबाते छुटभैय्ये क्राइम रिपोर्टर के जैसे लगे जो कुछ भी बोल सकता है, गालियां भी डंटा और दंड से मैं कभी नहीं डरती, ये सुधार के सबसे ईमानदार तरीके हैं। पर जब बात सदिधांत की आती है तो मुझे यह स्वीकार्य नहीं। ऐसे में सोमवार के तय किया कि अब मुझे यहां और नहीं रहना चाहिए।

वनीत सक्सेना के अपने अनुभवों का असर है या कुछ और, वह हमेशा बहुत खेल करते हैं। नयिम के हिसाब से मेरा प्रोबेशन पीरियड 31 जनवरी 2018 को समाप्त हो गया। 1 फरवरी को मुझे जानकारी दे दी जानी चाहिए थी कि मैं कन्फर्म हुई या मुझे क्वेश्चन मिला है। पर करीब दो महीने मुझे कंफ्यूजन में रखा गया। यह वह समय था जब सीनियर साथी रश्मा भंडारी जी के अचानक टर्मिनट कर दिया गया था। मैं बहुत मानसिक दबाव में रही किन जाने का मुझे भी रश्मा जी की तरह यह सब झेलना पड़े। इस दौरान दो बार चार विभाग से मैंने जानकारी ली, बताया गया कि जनवरी में ही उनकी ओर से संपादक के मेल करके प्रोबेशन के संबंध में फैसला लेने को पूछा गया था। रिमाइंडर भेजे जाने पर भी मेल पेंडिंग में है। फिर मध्य मार्च में कसपताहकि बैठक में घोषणा की गई कि अब मेरा काम बेहतर है, मुझे कन्फर्म किया जागा, जो 17 अप्रैल तक प्रक्रिया में ही रहा।

000 00 00000 00 00000 000000 00 00000 00 000 000000 0000000 00000 00 00000 0000000 :-

00000 0000 000000 00 00000

मुझे यकीन है कि अगर चुपचाप 'यस सर' मोड पर काम करती रहती तो रूर किसी रोड बैंक डेट में कन्फ्रमेशन लेटर पकड़ा दिया जाता। न चाहते हुए भी मुझे उस पर दस्तखत करना होता। क्या मानसिक दबाव किसी गिनती में नहीं आना चाहिए ?

अपनी टीम से हमेशा विश्वास की अपेक्षा रखने वाले वनीत सक्सेना इतने इनसिक्मोर हैं कि आपस में साथी बातें भी करें तो उन्हें लगता है कि उनके खिलाफ साजिश की जा रही है! बाक्यदा बैठक में यह कह भी चुके हैं कि लोग उनके खिलाफ साजिश कर रहे हैं। इन सब के बाद अब ऑफिस में हर कोई कदूसरे से बात करने से बचता है। ऑफिस का माहौल सर्विलांस सेल जैसा बन चुका है। जिस जगह रिपोर्टर अपने दिन के 14 से 18 घंटे बित्ता रहा है, वो कपल हलके मन से मुसकुरा तक नहीं सकता। बाकी डेस्क पर भी हाल समान है। लकियां गोर से बोले या हंस दें तो नसीहत दी जाती है कि उन्हें जीवन भर नौकरी तो करनी नहीं, बच्चों के संस्कार देने के लिए तो समझ ही लें।

वनीत जी के पास हर ककर्म की चटिठा है, बिना बात के मेल और उनका मनमाफकि स्पष्टीकरण कोई जुबान चलाने की जरूरत नहीं करेगा क्योंकि हर मंडे

Written by मेरी बटिया संवाददाता
Thursday, 05 July 2018 03:16

मीटिंग में बताया जाता है कि यह पत्रकारिता नहीं नौकरी है। सबकी गलतियों के मेल उनपर है, कोई शकियत तो करके देखे, वह ऊपर जस्टिफाई कर देंगे। इस मानसिक दवाब की भी कोई गनिती नहीं??

नयिमों के नाम पर दादागिरी चला रहे वनीत सक्सेना ने अमर उजाला के नयिमों की धज्जियां उठाकर रख दी हैं। साप्ताहिक बैठक के मायने अब सिर्फ भाषण देना और गुस्से में गालियां देना भर रह गया है। प्लानिंग मीटिंग में प्लान पर कभी कोई बात ही नहीं होती। बेचारे नई सर रूर प्लानिंग पूछने की कोशिश करते हैं पर वैश्य जी की समीक्षा और वनीत सक्सेना जी के भाषण के अतिरिक्त कुछ नहीं होता। लोगों की गलतियों पर सबके सामने उनकी पोस्ट और अनुभव पर सवाल खड़ा किया जाता है। यह किस तरह का सुधारात्मक प्रयास है? मैंने मीटिंग में लोगों को रोते देखा है। पवन चंद्र जी और अभषिक टंडन जी के सबके सामने रोते देखना मेरे लिए सबसे दुखद पलों में से है। वनीत सक्सेना जी ने कसाप्ताहिक मीटिंग में बोल कि जब भी वह सुधार के लिए डांटते हैं तो उसे अभद्रता मान लिया जाता है इसलिए अब वह गांधीगिरी करेंगे। उन्होंने गांधीगिरी के जसि रूप में परिभाषित किया वो शर्मनाक था। बोले- अब से जो भी गलती करेगा उसकी दनि में दो बार आरती उतरवाई जाएगी, जिसके लिए मैं नो डा से लकियां बुलवा लेता हूँ। उस दनि मीटिंग में बैठी हम तीन लकियां सन्न रह गईं (000000 :)

00 00 00 000000 00000000 00 000000000 , 0000000 00000 000000 00 000000 , 00 0000 00000 000000 00 00000000000 00000 00000 00 000000 00000000 00 0000000 00 00000000 0000 0000 00 00000 000000000 00000 00 0000 0000 , 000000000 0000 00000 0000 00 000000 00 00000 0000 00000 00000 0000 0000 0000 0000 00 00000 00 00000 00000000 0000 00000 00 0000 0000000 0000000 000000 00 0000 000000 00000000 000000 00 000000 00000000 :-

000000-0000 00 000 000000 00 00000 00 00000 000 0000 00000000

नोट:- इस महिला पत्रकार ने तो अपने साथ लगातार होते जा रहे अपमान, और उत्पीड़न के कसीमा तक सहन किया, लेकिन पानी जब नाक से ऊपर जाने लगा तो उसने अपने संस्र्थान के प्रबंधन तक अपनी शकियत दर्ज की, और उस संस्र्थान को बाय-बाय कर दिया। आपके आसपास भी ऐसी घटनाएं पसरी ही होती होंगी। हो सकता है कि वह उत्पीड़ित महिला आप खुद हों, या फिर आपके कोई सहेली-सहकर्मी अथवा कोई अन्याय। इससे क्वी या फर्क पड़ता है कि आप किसी अखबार, चैनल में काम करती हैं, या फिर किसी आउटसोर्सिंग या मल्टी टिनेशनल कम्पनी की कर्मचारी हैं।

अगर आपके ऐसी किसी घटना की जानकारी हो तो हमें भेजा जा सके। निसंकेच आपके सहयोग से हम ऐसे हादसों-उत्पीड़नों के खिलाफ कजोरदार अभियान छेड़ कर ऐसी घनिने माहौलों को मुंहतोड़ जवाब दे सकते हैं। आप हमें हमारे इस ईमेल पर सम्पर्क कर सकते हैं। आप अगर चाहेंगे, तो हम आपको नाम नहीं प्रकशति करेंगे।

kumarsauvir@gmail.com 00 meribitiyakhbar@gmail.com 000

00 00 00 000000 00000000 00 000000000 , 0000000 00000 000000 00 000000 , 00 0000 00000 000000 00

00000-0000 00 000 000000 00 00000 00 00000 000 000 0000000

Written by मेरी बटिया संवाददाता
Thursday, 05 July 2018 03:16

00000000000 00000 00000 00 000000 000000000 00 0000000 00 00000000 00000 0000 00 00000 000
00000000000 00000 00 0000 0000, 000000000 0000 00000 0000 00 0000000 00 000000 0000 00000 00000 0000 000
00000 0000 00 00000 00 00000 000000000 0000 00000 00 00000 000000000 0000000 00 0000 0000000 0000000
00000 00 0000000 000000000 :-

000000-00000 00 000 000000 00 00000 00 00000 000 000 0000000